बाधें रखती हैं विज्ञान कथायें

– सुन्दर नौटियाल

मेरे जैसे कई हिंदी पाठकों की पहली पसंद श्री देवेन्द्र मेवाड़ी लिखित यह 'मेरी प्रिय विज्ञान कथायें' पुस्तक, आधार प्रकाशन द्वारा मुद्रित है। मेवाड़ी जी की रसभरी, रंगभरी, विशिष्ट शैली से सजी यह पुस्तक पाठकों को अंत तक बांधे रखती है और पाठक इसकी प्रत्येक कहानी को पढ़कर ही चैन लेता है। विज्ञान कथा साहित्य के परिचय के साथ शुरू की गयी यह किताब 12 अलग–अलग कहानियों का संकलन है। हर कथा को भूत, वर्तमान और भविष्य के परिदृश्यों से इस प्रकार गूंथा गया है कि पाठक कल्पनाओं के असीम लोक में चला जाता है। उसकी किश्ती कभी भूत की निश्छल सरिताओं में प्राकृतिक छटा के बीच तैरती है तो कभी वर्तमान की गंदली, प्रदूषित, सड़ांध भरी नदियों में हिचकोले खाती है। कभी अन्तरिक्ष यानों की सैर करता मानव परग्रही जीवों से सीख ले रहा होता है तो कभी विज्ञान का भविष्य उसके विनाशकारी प्रयोग की चेतावनी से सिहरन पैदा कर जाता है।

'अन्तिम प्रवचन' जैसी कहानी जहां पाठक को कई दशक आगे के कल्पना लोक में ले जाकर 'क्लोन मानव' के जरिये मानवीय मूल्यों की पहचान करवाती है वहीं 'अतीत में एक दिन' कहानी लेखक के प्रकृति प्रेम को उजागर करती है जिसमें भूतकाल की प्रकृति से की गयी छोटी सी छेड़छाड़ भविष्य की बड़ी त्रासदी बन जाती है। 'खेम एन्थोनी की डायरी' जहां परग्रही जीव के जरिये वृक्ष मानवों के कल्पनालोक में विचरण करवाती है वहीं 'सभ्यता की खोज' भविष्य के रोबोटिक संसार में भी वैज्ञानिक रूप से कम सभ्य इंसान की तलाश करते पाठक को सुदूर अन्तरिक्ष के रोबोटिक लोक में ले जाती है। 'एक और युद्ध' तथा 'चूहे' छोटी कहानियां हैं लेकिन पहली कथा एक ही क्षण में जहां विज्ञान की संहारक क्षमता और उससे उपजे वीभत्स दृश्यों से रूह को कंपा जाती है वहीं दूसरी चूहों के जरिये मानव समाज में, सभ्यता से उपजी अराजकता की और बरबस ध्यान खींचती है। एक वैज्ञानिक के परखनली शिशु की खोज और किराये की कोख से मानव जीवन को खुशहाली से भरने की अपूरित सफलता की कहानी है 'कोख' जिसमें समाज और कानून के समक्ष लेखक और विज्ञान दोनों को नतमस्तक होना पड़ा है। एक और कहानी 'पिता' एक मासूम असहाय औरत को उसके बच्चे के हक दिलाने के लिए जूझते एक वकील की कहानी है जो अपना केस जीतने के बाद भी स्वयं एक द्वंद्व से जूझ रहा है कि आखिर बच्चे का पिता है कौन? आखिरी कथाओं में शामिल 'दिल्ली, मेरी दिल्ली', 2030 के काल्पनिक वर्ष में प्रदूषित हो चुकी दिल्ली की तस्वीर और स्वच्छ आबोहवा को तरसती दिल्ली की तस्वीर को एक पोते के अपने दादा को लिखे पत्रों के माध्यम से दर्शाने का सार्थक प्रयास करती है।

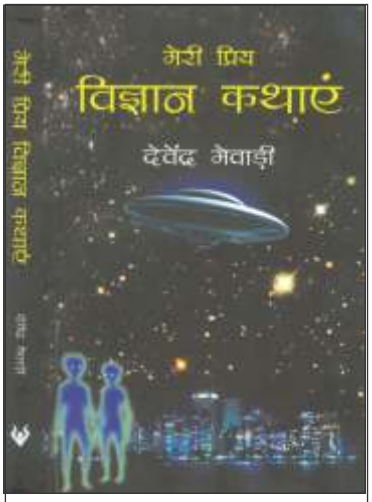

पुस्तक : मेरी प्रिय विज्ञान कथाएं
लेखक : देवेन्द्र मेवाड़ी
प्रकाशक : आधार प्रकाशन
मूल्य : 325/–

कुल मिलाकर विज्ञान और वैज्ञानिक फंतासियों से सरोकार रखने वाले लोगों के लिए यह किताब किसी वरदान से कम नहीं है, और साहित्यिक कथा प्रेमियों के लिए कल्पनालोक की नीव पर बुनी सामान्य कहानियों की बजाय कल्पना, फंतासी और यथार्थ विज्ञान पर आधरित ये कथाएं नये स्वाद का अनुभव करवाने वाली हैं। ये कथाएं विज्ञान के वरदान और अभिशाप दोनों स्वरूपों का आइना दिखाकर अंधाधुंध प्राकृतिक दोहन, मशीनों पर बढ़ती निर्भरता, सभ्यता–घाती परमाणु और रसायनिक हथियारों की संहार क्षमता और ख़त्म होते मानवीय मूल्यों के प्रति पाठक को सचेत करके ये सन्देश व्यापक समाज तक ले जाने का दायित्व सौंप जाती हैं।

(लेखक उत्तरकाशी स्कूल में शिक्षक हैं)